Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **"_ फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका।"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

फ्रांस की क्रांति में दार्शनिकों की भूमिका।

नेपोलियन बोनापार्ट ने यदि एक समय कहा करता था यदि रूस नहीं होता तो फ्रांस की राज्य क्रांति नहीं होता | उसके इस कथन से ही फ्रांस की क्रांति में दार्शनिक की महत्व भूमिका है |यदि क्रांति होती भी तो रूस के सामान ही होती हमारे कहने का मतलब यह है की साधारण रप में होती | सच तो यह है की क्रांति में उसका बहुत बड़ा हाथ था | उन लोगो ने ही माध्यम वर्ग के लोगो को प्रभावित किया | इसमें सदैव नहीं की 18 वी सदी के इन विरो विद्वान का हाथ क्रांति में था |

चुकी 17 वी और 18 सदी में शतावदी में यूरोप की जनता की दिलो दिमाग में विधुत जागरण की भावना तेजी से घर आ गए थे | इसलिए इसे कुछ विद्वान ने अवधि को क्रांति की अवधि कहकर सम्बोधित किया है | इसके पर्भाव बिच फैले हुए ढकोसला के बिच काळा बदल फैट गया और जनता अब हर चीज की वास्तविक को कसौटी पर कसने लगी तर्क और विज्ञान की तर्क और विज्ञानं की कसौटी पर कसी हई चीजों से जनता को लगाओ होने लगा बुराईयो के चलते इस समय लोगो का अस्त वस्त

होने लगा | इस समय राजनैतिक और समाजिक ऐसी हो गयी थी की समाप्त करना जरूर हो गया था | लेकिन उसके सुधर होना असंभव हो गया था | ऐसे लोगो पहचाना और उस समय के दार्शनिक ने इस नई विचार धारा जमकर प्रचार लिया | फ़्रांस के सबल माध्यम के लोग ने इन्हे दार्शनिक के बिचार धारा का जान साधारण के बिच प्रचार किया | इतना ही नहीं उन्होंने जनता से एक असंतोष व्यवस्था को अपील करने का नर्देश दिया |

फ़्रांस के दार्शनिक पर इंग्लैंड के लेखकों और वहा के शासन व्यवस्था का इक्षा प्रभाव पड़ा | इतना ही नहीं वहा के संसद और व्यतिगत स्वतंत्रता को दिलाजान से चाहा तथा फ़्रांस में असंतोष की जड़ राजा के साथ वेवहार किया | कुलीन वर्ग के लोग ने भी उनके ग्रंथो को काफी उत्साह और चाव के साथ अध्यन किया | जन साधारण को इस तरह से उत्साहित करने का श्रेय निम्नलिखित दार्शनिक को है, जिनकी भूमिका का वर्णन भी उस क्रांति में इस प्रकार से किया गया है |

1.मौटेस्क्यू

जब मौटेस्क्यू राजतंत्र शासन का बहुत बड़ा समर्थक था | चर्च की बुराई और राजा के असमित अधिकारों में उसको विश्वाश नहीं था | किन्तु वह राजा के देवी अधिकारों के सिद्धांत का विरोध करता था और इंग्लैंड का शासन व्यवस्था से वह अत्यधिक प्रभावित था | उसने अपने प्रशिद्ध ग्रन्थ माध्यम से फ़्रांस की जनता के सामने इस सचाई को रखा की राज्य के प्रमुख्य तीन तत्व है | मौटेस्क्यू के अनुसार इंग्लैंड की सफलता का रहस्य था | उसने इस बात पर जोर दिया की शासन की सुचारु रूप से चलाने के लिए इन तीनो संतानो को चलाने के लिए | मौटेस्क्यू के इन विचारो से प्रभावित होकर उस युग की जनता ने हर देश में नियंत्रण विधान की माँग शाशको के समक्ष रखी फलस्वरूप जनता का रक्षा के लिए शुभारम्भ हुआ |

2.वाल्टेयर

वाल्टेयर इस युग में दूसरा प्रसीद दार्शनिक हुआ | वह चर्च की रूढ़िवादिता अंग शोषण का विरोध था | उसने अपने चर्च और राज्य की बुराई की और लोगो का ध्यान आकर्षित किया | फलस्व्रूप जनता में एक नए दृस्टि कोण

का विकाश हुआ और ये एक आदर्श शासन करने लगा | वाल्टेयर का कहना था की चर्च के प्रभाव के अंत से ही नियाय का शासन किया जाय | वह ऐसे शासन का समर्थक था की जिसका उद्देश्य जनता का कल्पना हो और शक्ति जनता के हाथो में हो |

3.रूसो

रूसो निरकुट सत्ता का कट्टर विरोधी था | और शक्ति का श्रोत वो जनता को मानता था | अपनी प्रशिद पुस्तक सामाजिक में अपने बिचारो का संकलप करते हुए फ्रांसीसी जनता को यह बताया की मनुष्य स्वतंत्र है | लेकिन वह हर जगह जंजीर से जकड़ा हुआ है |

References: Internet & Competitive books.